



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

3/4/82

सं० १२] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च २०, १९८२ (फाल्गुन २९, १९०३)
No. 12] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 20, 1982 (PHALGUNA 29, 1903)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ		पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किये गये संकल्पों और असांख्यिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	309	भाग II—खण्ड 3(iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरण (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किये गये सामान्य सांख्यिक नियमों और सांख्यिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	—
भाग I—खण्ड 2—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएँ	361	भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किये गये सांख्यिक नियम और आदेश	47
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किये गये संकल्पों और असांख्यिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएँ	5	भाग III—खण्ड 1—उच्चतम न्यायालय, महालखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासनों, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के सम्बन्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएँ	3399
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएँ	363	भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएँ और नोटिस	119
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*	भाग III—खण्ड 3—मुख्य प्रायुक्तों के प्राधिकार के अधीन पथरा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएँ	87
भाग II—खण्ड 1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*	भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएँ जिनमें सांख्यिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएँ, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	975
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस	75
भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरण (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किये गये सामान्य सांख्यिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	571	भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुसूचक	*
भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरण (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किये गये सांख्यिक आदेश और अधिसूचनाएँ	1027		

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई।

CONTENTS

	PAGE		PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	309	PART II—SECTION 3 (iii).—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules and Statutory Orders (including bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories) ..	—
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	361	PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence ..	47
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence ..	5	PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Supreme Court, Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administrations, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	3399
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence ..	353	PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	119
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations ..	*	PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners ..	87
PART II—SECTION 1-A.—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations ..	*	PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies ..	975
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of the Select Committee on Bills ..	*	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	75
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	571	PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi ..	*
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	1027		

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1981

सं. 15 प्रेज/81—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता अथवा साहस के कार्यों के लिए “वायू सेना मंडल”/“एयरफोर्स मंडल” प्रदान करने का महर्ष अनुमोदन करते हैं :—

विंग कमांडर पृथ्वी सिंह बरार (6007),
फ्लाईंग (पायलट)।

विंग कमांडर पृथ्वी सिंह बरार महर्ष, 1979 से संक्रियात्मक सुपरसोनिक युद्धक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे हैं। विसम्बर, 1960 में इन्हें कमीशन दिया गया था और तब से वे अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

स्क्वाड्रन में सक्रिय सेवा के दौरान इन्होंने बैम्पायर, हंडर, नेट और मिग 21 जैसे जेट फाइटरों की संक्रियात्मक उड़ानें भरने में पूरी योग्यता हासिल की। ये इन विमानों की 2000 से भी अधिक घंटों की दुरुटना रहित उड़ानें भर चुके हैं। कड़ी मेहनत कर इन्होंने पायलट अटैक इन्स्ट्रक्टर, फाइटर कॉम्बेट लीडर और रक्षा सेना स्टाफ कालेज के पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं। भारत-पाक संघर्ष 1965 और 1971 के दौरान इन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया। इन्हें टैक्टिक्स एंड कम्बैट डेवेलपमेंट एस्टीमेशन का सन्स्थापक सदस्य नियुक्त किया गया जहां एयर स्टाफ निरीक्षण निदेशालय में इन्होंने उड़ान निरीक्षक के तौर पर काम किया। इस अवधि में इन्होंने युद्ध प्रशिक्षण का स्तर उंचा करने का प्रयास किया और उसमें सफलता हासिल की। एयर स्टाफ निरीक्षण निदेशालय में निरीक्षक के रूप में इन्होंने खुद अपने निरीक्षण और मार्ग-दर्शन से हमारी युद्धक स्क्वाड्रनों की संक्रियात्मक तत्परता और कारगर ढंग से काम करने की क्षमता बढ़ाई।

विदेश में प्रतिनियुक्ति से वापस लौटने पर इन्हें एक संक्रियात्मक मिग-21 स्क्वाड्रन की कमान सौंपी गई जहां इन्होंने अपनी स्क्वाड्रन की युद्ध-क्षमता बढ़ाने के लिए कठोर परिश्रम किया। इस के फलस्वरूप इनकी स्क्वाड्रन ने इन्स्ट्रूमेंट रोटिंग ट्राफी के लिए सबसे अच्छी स्क्वाड्रनों में वि्वतीय स्थान प्राप्त करने का गौरव पाया।

इस प्रकार विंग कमांडर पृथ्वी सिंह बरार ने व्यावसायिक कुशलता, योग्य नेतृत्व के गुण और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

विंग कमांडर श्री वीनीधारी आनंद भास्कर नायडू (7230),
फ्लाईंग (पायलट)।

विंग कमांडर श्री वीनीधारी आनंद भास्कर नायडू ने 18 अक्तूबर, 1979 को एक युद्धक स्क्वाड्रन में कमान अफसर पद का कार्यभार संभाला। इससे पहले वे एक और युद्धक स्क्वाड्रन

में फ्लाइट कमांडर थे। वरिष्ठ क्लाइट कमांडर के पद पर काम करते हुए इन्होंने अपनी स्क्वाड्रन को एक अधिक अधुनातम विमान से लैस करने का काम बड़ी सुगमता से पूरा किया। इनकी संगठन करने की क्षमता और कर्तव्यनिष्ठा से स्क्वाड्रन कुछ ही महीनों में संक्रियात्मक उड़ानें भरने में सक्षम हो गई और फरवरी से अप्रैल, 1979 तक वे महीने से भी अधिक समय के लिए एक संक्रियात्मक ग्रुप के अधीन नियुक्त किए जाने पर इसने वायू रक्षा संबंधी कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया।

बाद में स्क्वाड्रन कमांडर के पद पर काम करने के दौरान इन्होंने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि इनकी स्क्वाड्रन की संक्रियात्मक कार्य-कुशलता का स्तर बहुत उंचा रहे और स्क्वाड्रन दुरुटना-रहित उड़ान का रिकार्ड कायम रखे। इससे पहले 1967 से 1969 के दौरान वायुसेनाध्यक्ष ने तीन बार और ए. ओ. सी-इन-सी. मुख्यालय मध्य वायु कमान तथा 1-संक्रियात्मक ग्रुप मुख्यालय ने एक-एक बार इनकी कार्यकुशलता और कर्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा की थी।

इस प्रकार विंग कमांडर श्री वीनीधारी आनंद भास्कर नायडू ने उच्च व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

स्क्वाड्रन लीडर साधू सिंह गिल (6770),
फ्लाईंग (पायलट)।

उड़ान को अनेक विधाओं में पारंगत स्क्वाड्रन लीडर साधू सिंह गिल अब तक 9000 घंटे की दुरुटना रहित उड़ानें भर चुके हैं। 1962 में इन्हें कमीशन दिया गया था। ये उन थोड़े से युवा पायलटों में से हैं जिन्हें 1963 में विदेश में कन्वर्शन प्रशिक्षण के लिए चुना गया था। एक साल के अंदर ही इन्होंने “बी ग्रीन” श्रेणी सहित संक्रियात्मक उड़ान भरने में पूरी तरह सक्षम पायलट का दर्जा हासिल कर लिया। इन्होंने अपने उड़ान अनुभवों को और बढ़ाया और कैप्टन के रूप में ज्यादातर जम्मू-कश्मीर के संक्रियात्मक क्षेत्रों की 2000 घंटे से अधिक उड़ानें भरीं। इन्हीं के बहुमूल्य अनुभवों के कारण बाद में मानकीकृत संक्रियात्मक प्रक्रियाएं बनाने में सहायता मिली। इन क्षेत्रों में सुरक्षित उड़ान भरने के लिए आजकल यही प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं।

1967 में स्क्वाड्रन लीडर गिल अर्हता प्राप्त फ्लाईंग पायलट बन गए। इस दौरान इन्होंने 3000 घंटे की प्रशिक्षण उड़ानें भरीं। भारत-पाक संघर्ष 1971 के दौरान इन्होंने लडाख के मैदान में कई बार बम फेंकने के काम में भाग लिया। स्क्वाड्रन में अर्हता प्राप्त फ्लाईंग प्रशिक्षकों की कमी होने के कारण इन्हें नए पायलटों को प्रशिक्षित करने का अतिरिक्त काम भी सौंपा गया जिसे इन्होंने बहुत योग्यता से पूरा किया।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर साधू सिंह गिल ने व्यावसायिक कुशलता और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

स्क्वाड्रन लीडर चन्द्र प्रकाश नायडू (10426)
फ्लाइट (पायलट)।

स्क्वाड्रन लीडर चन्द्र प्रकाश नायडू जनवरी, 1970 से अब तक 3900 घंटे की वर्षता रहित उड़ान भर चुके हैं। इसमें से 500 घंटे की उड़ानें अकेले पूर्वी क्षेत्र की हैं। 1971 की लड़ाई के दौरान वायु सर्वेक्षण चौकी में एडजुटेंट पद पर काम करते हुए इन्होंने स्वच्छ से कृषक विमान में 17 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं।

उड़ान प्रशिक्षक के रूप में 5 साल की छोटी अवधि में ही स्क्वाड्रन लीडर नायडू ने किरण और एच एस 748 विमान में 1620 घंटे की प्रशिक्षण उड़ानें भरीं। ट्रांसपोर्ट ट्रेनिंग विंग में तीन साल की वर्तमान कार्यवाधि में इन्होंने फ्लाइट कमांडर और कभी-कभी मुख्य उड़ान निरीक्षक के तौर पर निरीक्षण कार्य करने के साथ-साथ 2000 से भी अधिक घंटों की उड़ानें भरी हैं। कृत-संकल्प होकर इन्होंने अपने छात्रों को प्रशिक्षित किया और थल एवम् वायु में उनकी कार्य कुशलता और व्यावसायिक स्तर को सुधारने में कर्तव्यनिष्ठा से सतत प्रयास किये। इतने अधिक घंटों की उड़ान भरने के अलावा इनकी उपलब्धियों में रूट ट्रांसपोर्ट रोल कैटेगरी "ए/मास्टर ग्रीन" इन्स्ट्रक्शनल कैटेगरी "ए2" तथा एच एस 748 विमान में कमान निरीक्षक शामिल हैं।

पर्यवेक्षक और कमान निरीक्षक के रूप में स्क्वाड्रन लीडर नायडू ने अपने सभी काम बड़े कारगर ढंग से पूरे किए। अपने इस कार्यकाल की थोड़ी सी अवधि में इन्होंने अपनी यूनिट के प्रशिक्षणार्थियों, स्टाफ पायलटों और प्रशिक्षकों को उच्च स्तर के प्रशिक्षण और संक्रियात्मक उड़ान भरने में सक्षम बना दिया। इन्होंने मानक संक्रियात्मक प्रक्रियाओं, प्रशिक्षण नियमों को आज की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के साथ-साथ उड़ान प्रक्रियाओं का मानकीकृत करने में भी बहुत योगदान दिया जिससे इनके यूनिट की कार्यकुशलता बहुत बढ़ी है।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर चन्द्र प्रकाश नायडू ने व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व क्षमता और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया है।

200576 मास्टर वारंट अफसर कण्ठत पयें केशवन मैनन,
फ्लाइट इंजीनियर।

पहली जनवरी, 1980 को फ्लाइट इंजीनियर लीडर के पद का कार्यभार संभालने से पहले मास्टर वारंट अफसर कण्ठत पयें केशवन मैनन जनवरी, 1975 से ट्रांसपोर्ट स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। अक्टूबर, 1955 में इन्होंने फ्लाइट इंजीनियर की अर्हता प्राप्त की और उस समय से ये कई संक्रियात्मक यूनिटों और विभिन्न प्रकार के परिवहन विमानों में काम कर चुके हैं। उन्होंने विभिन्न प्रकार के विमानों में कुल 8300 से भी अधिक घंटों की उड़ानें भरी हैं जिसमें 2000 घंटे की उड़ानें संक्रियात्मक कार्यों की हैं।

सुपर क्रॉस्टेलेशन विमान चालन में मास्टरवारंट अफसर मैनन ने "ए" श्रेणी का प्रमाणपत्र 1977 से हासिल किया हुआ है। फ्लाइट इंजीनियर के तौर पर इन्होंने उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। उड़ान के दौरान इंजन की खराबी के कारण उत्पन्न आपात-स्थितियों में अपने व्यावसायिक ज्ञान और सूझ-बूझ से समय पर कार्रवाई करने के कारण स्क्वाड्रन द्वारा सुरक्षित उड़ान भरने का

उच्च रिकार्ड स्थापित करने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा और जिसके लिए वायु सेना मुख्यालय ने इनकी प्रशंसा की। बहुत बार इन्होंने, ग्राउंड तकनीशियनों का खासकर आउट स्टेशनों पर, विमान की खराबी ठीक करने में कौशल मार्गदर्शन किया। इन की व्यावसायिक कुशलता के कारण स्क्वाड्रन बहुत से आवासन समय रहते पूरे कर सकी।

इस प्रकार मास्टर वारंट अफसर कण्ठत पयें केशवन मैनन ने व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

संख्या 16-प्रेज/82-राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता अथवा साहस के कार्यों के लिए "नौसेना मेडल"/"नेवी मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:-

लैफ्टिनेंट कमांडर पार्थ बिक्रम चौधरी (एस सी 00575 एफ)
भारतीय नौसेना

लैफ्टिनेंट कमांडर पार्थ बिक्रम चौधरी ने 1 जुलाई, 1965 को भारतीय नौ सेना में कमीशन प्राप्त किया। अक्टूबर, 1966 में ये नौसेना की वायुशाखा (एयर विंग) में नियुक्त हुए और मई, 1968 में इन्होंने पायलट की अर्हता प्राप्त की। सितम्बर, 1970 में हेलीकाप्टर कनवर्शन कोर्स सफलता पूर्वक पूरा करने पर इन्हें आई. एन. एस. हंस के 321-नौसेना वायु स्क्वाड्रन मुख्यालय में स्टाफ पायलट नियुक्त किया गया। मई, 1971 में इन्हें उड़ान कार्य के लिए नव निर्मित नौसेना पोत "वर्षक" का फ्लाइट कमांडर नियुक्त किया गया।

लैफ्टिनेंट कमांडर चौधरी ने फ्लाइट कमांडर की कार्यवाधि के दौरान मई, 1971 से अप्रैल, 1973 तक कुल 517 घंटे को उड़ान भरी। इसमें से अधिकांश उड़ानें समुद्र में ही नौसेना पोत दर्शन और सागर बीप की छोटी-छोटी अवतरण पट्टियों से भरी गईं जिसके लिए एकदम सही-सही उड़ान भरने की वक्षता रखना जरूरी है। अप्रैल, 1973 में केवल खम्बात की खाड़ी का सर्वेक्षण करने के लिए ही इन्होंने 300 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें भरी। इन्होंने पचास घंटे से भी अधिक समय की उड़ानें अतिशय महत्वपूर्ण/बहुत महत्वपूर्ण व्यक्तियों को ले जाने में भरी हैं। जुलाई और नवम्बर, 1971 के बीच बम्बई में एक मात्र फ्लाइट कमांडर के रूप में इन्होंने पश्चिमी नौसेना कमान की उड़ान संबंधी सभी जरूरतों को पूरा किया जिनमें बहुत सवरे और शाम डलने पर बन्दरगाहों की गश्त लगाना भी शामिल था।

इससे पहले बंगला देश में जनवरी से मार्च 1972 तक की अपनी प्रतिनियुक्ति के दौरान इन्होंने विमान से सर्वेक्षण करके ऐसे स्थानों का पता लगाया जहाँ सुरंगें बिछी हुई थीं। चटगांव बन्दरगाह के पास समुद्र में दूर तक बिछाई गई बहुत सी सुरंगों को इन्होंने सफलता पूर्वक नष्ट कर दिया और व्यापारी जहाजों के आवागमन का मार्ग सुरक्षित कर दिया। अत्यन्त खराब मौसम की स्थितियों में भी इन्होंने व्यापारी जहाजों के बेड़ों को अपने हेलीकाप्टर की सुरक्षा के अन्तर्गत सुरक्षित पहुँचाने का कार्य भी किया। इसी अवधि में इन्होंने व्यापारी जलयान "विश्व कुसुम" के भग्नावशेषों का भी पता लगाया।

इस प्रकार लैफ्टिनेंट कमांडर पार्थ बिक्रम चौधरी ने व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

लेफ्टिनेंट कमांडर रोमेश सिंह कंवर (00995-कै)
भारतीय नौसेना

लेफ्टिनेंट कमांडर रोमेश सिंह कंवर नौसेना में नौसैनिक विमानन कौशल के रूप में भर्ती हुए और इन्होंने जून, 1969 में उड़ान प्रशिक्षण सफलता पूर्वक पूरा करने के बाद कमीशन प्राप्त किया। दिसम्बर 1970 में इन्हें हेलीकाप्टर कनवर्शन के लिए चुना गया। इसके बाद अन्य नियुक्तियों के अलावा इन्होंने नौसेना पोत दर्शक के 321 नौसेना वायु स्ववाङ्मन में फ्लाइट कमांडर के रूप में कार्य किया। जनवरी, 1977 में इन्हें अहंता प्राप्त उड़ान प्रशिक्षक पाठ्यक्रम के लिए चुना गया। पाठ्यक्रम पूरा कर लेने के बाद इन्हें 561 भारतीय नौसेना वायु स्ववाङ्मन में अहंता प्राप्त उड़ान प्रशिक्षक स्टाफ में और फिर वरिष्ठ पायलट के रूप में नियुक्त किया गया।

उड़ान प्रशिक्षक तथा वरिष्ठ पायलट के रूप में इनका कार्य अनुकरणीय रहा। इन्होंने अकेले ही 11 हेलीकाप्टर कनवर्शन कोर्स के चार पायलटों को उच्च हेलीकाप्टर कनवर्शन कोर्स में और 14 हेलीकाप्टर कनवर्शन कोर्स में छः पायलटों को आधुनिक कनवर्शन कोर्स में प्रशिक्षित किया। यह कार्य इन्होंने उस समय किया जब स्ववाङ्मन के पास अन्य कोई अहंता प्राप्त उड़ान प्रशिक्षक नहीं था और जब काफी लम्बे समय तक सभी अल्पूत हेलीकाप्टरों की उड़ान बन्द रही थी। हेलीकाप्टर पायलटों को प्रशिक्षण देने में इनका योगदान बहुत सराहनीय रहा है। वरिष्ठ पायलट के रूप में इन्होंने हेलीकाप्टर पर 512 घंटे उड़ान कीं और इनमें से अधिकांश उड़ानें प्रशिक्षण कार्य से संबंधित थीं।

इन्होंने गहरे समुद्र में भारतीय पोतों और साथ ही विदेशी पोतों में फंसे लोगों की जीवन रक्षा के लिए मानसूनी वर्षा और खराब मौसम के बावजूद उड़ानें भरीं। 12 जुलाई, 1976 की इन्होंने बम्बई समुद्र से ग्रीक व्यापारी पोत लिब्रा से पोत के एक बीमार कर्मचारी को बचाया। 26 जुलाई, 1976 को बम्बई से 30 मील दूर पनामा के एक सुपर टैंकर टैक्सको साया कैबी से बिल के दौरे से पीड़ित एक रोगी को सुरक्षित निकाल लाए। 27 जुलाई, 1979 को कोचीन के पास समुद्र से एक ब्रिटिश टैंकर व्यापारी पोत लीनस्टर से एक मूर्च्छित रोगी को बचा लाए।

इस प्रकार लेफ्टिनेंट कमांडर रोमेश सिंह कंवर ने उच्च कोटि की उड़ान कुशलता, अनुकरणीय नेतृत्व और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

लेफ्टिनेंट कमांडर सुरेन्द्र कुमार चांदना (01060-एच)
भारतीय नौसेना

लेफ्टिनेंट कमांडर सुरेन्द्र कुमार चांदना नौसेना में विमानन (एविएशन) कौशल के रूप में भर्ती हुए और दिसम्बर, 1959 में कमीशन प्राप्त किया। अब तक इन्होंने 2100 घंटों से अधिक की उड़ानें की हैं जिनमें से 1500 घंटों की उड़ानें अल्पूत मेक-111 और मंच रोल हेलीकाप्टरों पर की गई हैं। मई, 1972 से मई 1974, जुलाई, 1976 से जुलाई, 1978 और अगस्त 1978 से मार्च, 1980 के दौरान इन्होंने क्रमशः 403.20, 430.05 और 616.55 घंटों की उड़ानें भरी हैं। दिसम्बर, 1975 में इन्हें उड़ान प्रशिक्षक पाठ्यक्रम के लिए चुना गया। पाठ्यक्रम पूरा कर लेने पर इन्हें हेलीकाप्टर प्रशिक्षण स्कूल में नियुक्त किया गया जहां इन्होंने प्रशिक्षण पा रहे पायलटों को हेलीकाप्टर कनवर्शन में प्रशिक्षित करने में विशेष योग्यता का परिचय दिया।

लेफ्टिनेंट कमांडर चांदना ने उड़ान प्रशिक्षक पाठ्यक्रम में जान से पूर्व नौसेना पोत "नीलगिरि" और "हिम गिरि" पर फ्लाइट कमांडर के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया था। अप्रैल, 1972 में इन्होंने एक अफसर को बचाया जो गोवा के पास समुद्र

में एक लड़ाकू विमान से कूब गए थे। 14 जनवरी, 1980 को इन्हें व्यापारिक जहाज "कैदार नाथ" से बिल के दौरे से गंभीर रूप से पीड़ित एक रोगी को ले आने का आदेश दिया गया इन्होंने तत्परता से विमान उड़ाया और व्यापारिक पोत का पता लगाया। पोत से लौटते को हेलीकाप्टर पर चढ़ाने में काफी समय लगने के बावजूद इन्होंने धैर्य बनाए रखा, और अन्त में 18.35 बजे धूमिल प्रकाश में रोगी को पोत से हेलीकाप्टर में खींच लाने में सफल हो गए।

इस प्रकार लेफ्टिनेंट कमांडर सुरेन्द्र कुमार चांदना ने व्यावसायिक कुशलता, छद् निश्चय और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

लेफ्टिनेंट अतुल विश्वनाथ वैद्य (01462-वाइ)
भारतीय नौसेना

1 जुलाई, 1980 को अल्पूत पायलट को अहंता प्राप्त लेफ्टिनेंट अतुल विश्वनाथ वैद्य को बोगमोलो तट के पास समुद्र में डूब रहे एक मछुए को खोजने और बचाने का आदेश दिया गया। उस समय ये ड्यूटी पर नहीं थे। आदेश मिलने के कुछ ही समय के भीतर ये अपने स्ववाङ्मन मुख्यालय तुरन्त पहुँच, अपने विमान को उस मिशन के लिए तैयार किया और निर्दिष्ट स्थान की ओर उड़ान भरी। नीचे उड़ रहे बादल और तूफानी हवाओं के कारण मौसम उड़ान करने में गंभीर बाधाएं पैदा कर रहा था। डूबने से बचे हुए प्राणी के ऊपर हेलीकाप्टर द्वारा परिक्रमा करते हुए उड़ान भरने में अत्यधिक सूक्ष्मता की आवश्यकता होती है विशेष रूप से उस समय जबकि समुद्र में उंची-उंची लहरें उठ रही हैं। इन प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद इन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और अपने साथी कमीवल की सहायता से उस मछुए को बचा लिया।

इस प्रकार लेफ्टिनेंट अतुल विश्वनाथ वैद्य ने व्यावसायिक कुशलता और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

लीडिंग सीमैन पूरन चन्द (084369-जेड)
भारतीय नौसेना

नौसेना का एक महत्वपूर्ण उपकरण समुद्र में 50 मीटर की गहराई में डूब गया था, जिसे बाहर निकालने के लिए 8/9 मार्च, 1980 को नौसेना पोत "निस्तार" को भेजा गया था। समुद्र में परिस्थितियां प्रतिकूल थीं और ऐसी बाधक स्थितियों में सामान्यतः गोताखोरी का जोखिम नहीं उठाया जाता।

इस उपकरण को बाहर निकालने के लिए लीडिंग सीमैन पूरन चन्द को सबसे पहले गोता लगाने के लिए चुना गया। समुद्र के अंदर चल रही तेज प्रतिकूल लहरों के बावजूद ये अपने भारी बचाव-गिरर का उस उपकरण के पास 18 मीटर से भी अधिक दूरी तक खींच कर ले गए। 45 मिनट से भी अधिक समय तक पानी के भीतर अत्यधिक विपरीत परिस्थितियां होने पर भी लगातार कार्य करने से इन्होंने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया और शेष गोताखोरों को प्रेरित किया जिन्होंने गोताखोरी में भाग लिया और अन्ततः उस उपकरण को बरामद करने में सफलता प्राप्त की।

इस कार्रवाई में लीडिंग सीमैन पूरन चन्द ने साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

नरेंद्र नाथ राय, इंजिन मकैनिक प्रथम श्रेणी (057098-डब्ल्यू)
भारतीय नौसेना।

नौसेना का एक महत्वपूर्ण उपकरण समुद्र में 50 मीटर की गहराई में डूब गया था जिसे बाहर निकालने के लिए 8/9 मार्च, 1980 को नौ सेना पोत "निस्तार" को भेजा गया था।

गोताखोरी के लिए बांधक परिस्थितियों में उपकरण की पुनः प्राप्ति के लिए किये जा रहे कार्यों में गहरे समुद्र में गोता लगाने वाले चार गोताखोरों ने उपकरण को बचाव गिबर से बांधने के असफल प्रयास किए। गोताखोरी के लिए स्थिति पहले से और भी ज्यादा खराब हो जाने के कारण जब उपकरण की निकाल लाने की संभावना बहुत ही कम प्रतीत हो रही थी, तो इंजिन मकैनिक नरन्ध्रनाथ राय इस असंभव से कार्य को पूरा करने के लिये आगे बढ़े।

अपने ह्दयनिश्चय और अधिक प्रयासों से ये बचाव-गिबर से उस उपकरण को बांधने में सफल हुए और उपकरण को ठीक हालत में बाहर निकाल लाया गया।

इस कार्रवाई में इंजिन मकैनिक नरन्ध्र नाथ राय ने ह्दय निश्चय, व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सु. नीलकण्ठन, राष्ट्रपति का उपसचिव

योजना मंत्रालय
सांख्यिकी विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 16 जनवरी 1982
सं. ए-46011/10/81-स्था.-11—इस विभाग के दिनांक 4 मई, 1981 की अधिसूचना सं. ए-46011/10/81-स्था.-11 के अधीन गठित बचत संबंधी कार्यकारी दल की रिपोर्ट प्रस्तुत करने की अंतिम तारीख दिनांक 9 नवम्बर, 1981 की समसंख्यक अधिसूचना के अनुसार 5 जनवरी, 1982 तक बढ़ाई गई थी। उसे अब और आगे 28 फरवरी, 1982 तक बढ़ाई जाती है।
वी. डी. आहुजा, अवर सचिव

कृषि मंत्रालय
कृषि और सहकारिता विभाग
नई दिल्ली, दिनांक 24 फरवरी 1982

संकल्प
सं. 43-28/74-एल. डी. टी.—भारत सरकार ने इस मंत्रालय के दिनांक 20 मई, 1981 के इसी संख्या के संकल्प के द्वारा पुनर्गठित केन्द्रीय कुक्कट विकास सलाहकार परिषद में

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1981

No. 15-Pres./82.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL/AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

Wing Commander PRITHVI SINGH BRAR (6007)
FLYING (PILOT).

Wing Commander Prithvi Singh Brar has been in Command of an operational supersonic fighter squadron since May, 1979. He was Commissioned in December, 1960 and has since held a number of important appointments.

During his active squadron service, he acquired a fully operational status on jet fighters which included Vampire, Hunter, Gnat and Mig 21. He has to his credit nearly 2000 accident free flying hours on these aircrafts. By dint of hardwork, he has completed the Pilot Attack Instructor, the Fighter Combat Leader, and the Defence Services Staff College Courses. His performance during Indo-Pak Conflicts, 1965 and 1971 was commendable. He was appointed founder member of Tactics and Combat Development Establishment and served as flying inspector at the Directorate of Air Staff Inspection. During this period, he endeavoured for and achieved high standards of combat training. As inspector at the Directorate of Air Staff Inspection, he raised the opera-

तional readiness and effectiveness of our fighter squadrons through his personal supervision and guidance.

1. श्री वी. सम्भासिव राय,
संयोजक,
अखिल भारतीय लघु कुक्कट पालन एसोसिएशन,
शिवनगर,
बारंगल-506002 (आन्ध्र प्रदेश)
2. श्री के. भास्कर राय,
अध्यक्ष,
आन्ध्र प्रदेश, कुक्कट पालक कल्याण एसोसिएशन,
1-1-169/क, चारमिनार क्रॉस रोड,
हैदराबाद-500020
3. श्री जोगा वेंकटरामन यादव,
मकान नं. 13-1-111
पुलिस स्टेशन के पास,
पिथापुरम-533450,
जिला पूर्वी गोवावरी,
आन्ध्र प्रदेश
4. श्री बानू सिंह,
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय पालक एसोसिएशन,
हरिन्द्र फार्म, डाकघर-डोरा,
महाराली-ब्लाक,
नई दिल्ली।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों और भारत के मंत्रालयों के विभागों को भेजी जाए।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सामान्य जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

पी. एस. काहली, अवर सचिव

tional readiness and effectiveness of our fighter squadrons through his personal supervision and guidance.

On his return from a tenure abroad, he was put in Command of an operational Mig 21 Squadron where he worked hard to build-up the combat potential of his Squadron. As a result, his Squadron achieved the distinction of being rated as the second-best Squadron for Instrument Rating Trophy.

Wing Commander Prithvi Singh Brar thus displayed professional skill, qualities of able leadership and devotion to duty of a high order.

Wing Commander SRIVINIGHARI ANAND BHASKAR NAIDU (7230) FLYING (PILOT).

Wing Commander Srivinighari Anand Bhaskar Naidu was serving as a Flight Commander in a fighter Squadron before he took over as Commanding Officer of another fighter Squadron from 18th October 1979. During his tenure as a senior Flight Commander, he smoothly accomplished the re-equipment of his Squadron by a more sophisticated aircraft. Through his organising ability and dedicated efforts, the Squadron achieved operational status within a few months and successfully completed its Air Defence duties on deployment under an operational group for over two months from February to April, 1979.

Subsequently as Squadron Commander he ensured for his Squadron a very high standard of operational efficiency and

an accident free record. Earlier, during the period 1967 to 1969, he was commended thrice by the Chief of Air Staff and once each by ACC-in-C Headquarters Central Air Command and Headquarters 1 Ops Group, for his high performance and dedication.

Wing Commander Srivinishari Anand Bhaskar Naidu has thus displayed high professional competence and exceptional devotion to duty.

*Squadron Leader SADHU SINGH GILL (6770)
FLYING (PILOT)*

Squadron Leader Sadhu Singh Gill, a pilot with many accomplishments, has over 9000 accident free flying hours to his credit. He was commissioned in 1962 and was one of the few young pilots who, in 1963, were selected for conversion training in a foreign country. He attained the status of a fully operational pilot with a 'B Green' category within a year. He consolidated his flying experience and flew over 2000 hours, as Captain, mostly in the operational areas of J&K. The valuable experience gained by him later helped in formulating the Standard Operating Procedures which are at present in use for safe flying in these areas.

In 1967, Squadron Leader Gill became a qualified flying instructor. During this tenure, he flew a total of 3000 instructional hours. During Indo-Pak conflict, 1971, he participated in several bombing missions on the front. Due to shortage of Qualified Flying Instructors in the Squadron, he was entrusted with the additional task of training new pilots, which he carried out competently.

Squadron Leader Sadhu Singh Gill has thus displayed professional competence and devotion to duty of a high order.

*Squadron Leader CHANDRA PRAKASH NAIDU
(10426) FLYING (PILOT)*

Squadron Leader Chandra Prakash Naidu has to his credit a total of 3900 hours of accident free flying since January 1970 of which 500 hours were flown in the Eastern Sector alone. During 1971 operations, while posted as the Adjutant of an Air Observation Post Flight, he voluntarily undertook seventeen operational sorties in a Krishak Aircraft.

Within a short period of 5 years as a flying instructor, Squadron Leader Naidu flew 1620 instructional hours on the Kiran and HS 748 Aircraft. In his present tenure of three years at Transport Training Wing, he has flown over 2000 hours while simultaneously carrying out supervisory duties as Flight Commander and, at times, as Chief Flying Instructor. He has displayed a missionary zeal in training his pupil and put in devoted and concerted effort to improve their professional standard, both on the ground and in the air. His achievements besides his large number of flying hours, included Route Transport Role category "A/Master Green", Instructional Category 'A2' and Command Examiner on HS 748 Aircraft.

As a supervisor and Command Examiner, Squadron Leader Naidu discharged his duties most effectively. Within the short span of his tenure, he enabled his trainees, staff pilots and instructors in the Unit to achieve a high standard of training and operational status. He has also contributed to a great extent in updating the standard Operation Procedures, Training Notes and in Standardising Flying Procedures, which have greatly enhanced the efficiency of the unit.

Squadron Leader Chandra Prakash Naidu has thus displayed professional competence, leadership capabilities and devotion to duty of an exceptional order.

*200576 Master Warrant Officer KAPPADATH PAZHAY
KESAVAN MENON FLIGHT ENGINEER.*

Master Warrant Officer Kappadath Pazhay Kesavan Menon was serving with a Transport Squadron since January 1975 before he took over as Flight Engineering Leader on 1st January, 1980. He qualified as a Flight Engineer in October, 1955 and has since been employed at various operational units and types of transport aircraft. He has flown a total of over 8,300 hours on different types of aircraft including over 2000 hours on operational missions.

Master Warrant Officer Menon has been holding 'A' category on Superconstellation aircraft since 1977. As a Flight

Engineer, he displayed a very high degree of professional skill and devotion to duty. His professional knowledge and presence of mind, which enabled him to take timely action during inflight engine emergencies, contributed greatly to the high Flight Safety record of the Squadron and was appreciated by the Air Headquarters. On several occasions, he provided able guidance to the ground technicians in rectifying snags especially at out stations. His high professional competence has enabled the Squadron to meet various commitments in time.

Master Warrant Officer Kappadath Pazhay Kesavan Menon has thus displayed professional competence and devotion to duty of an exceptional order.

No. 16-Pres./82.—The President is pleased to approve the award of the NAO SENA MEDAL/NAVY MEDAL to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :-

Lieutenant Commander PARTHA BIKRAM CHOWDHURI (SC 00575 F) INDIAN NAVY.

Lieutenant Commander Partha Bikram Chowdhuri was commissioned in the Indian Navy on 1st July, 1965. He joined the Naval Air Arm in October, 1966, and qualified as a pilot in May, 1968. He successfully completed his helicopter conversion course in September, 1970, and was appointed as Staff Pilot at Headquarters of the 321 Indian Naval Air Squadron at INS Hansa. In May, 1971 he was appointed Flight Commander of the newly commissioned flight of Indian Naval Ship Darshak.

During his tenure as Flight Commander Lieutenant Commander Chowdhuri flew a total of 517 hours from May, 1971 to April, 1973. Most of this flying was carried out at sea from the small helo decks of INS Darshak and Sagardeep and involved accurate and precise flying skills. In April, 1973, he completed over 300 hours of Operational flying solely for the survey of the Gulf of Cambay. He has also flown over fifty hours of VVIP/VIP sorties. As the only Flight Commander in Bombay between July and November, 1971, he undertook all commitments of Western Naval Command including the dawn and dusk harbour patrols.

Earlier, during his tenure on deputation to Bangla Desh from January to March, 1972, he carried out air borne searches for mines. He successfully located and destroyed several mines at sea off the entrance of Chittagong harbour and ensured safe passage for merchant vessels. He also carried out Marchant Convoy Escort duties on the helicopter under adverse weather conditions. During the same period, he also located the wreck of the Marchant Vessel 'Vishwa Kusum'.

Lieutenant Commander Partha Bikram Chodhuri has thus displayed professional skill, leadership and exceptional devotion to duty.

*Lieutenant Commander ROMESH SINGH KANWAR
(00995-K) INDIAN NAVY*

Lieutenant Commander Romesh Singh Kanwar joined the Navy as a Naval Aviation Cadet and was commissioned in June, 1969, after successfully completing the flying training. He was selected for Helicopter Conversion in December, 1970. Thereafter, in addition to other appointments, he served as Flight Commander of 321 Indian Naval Air Squadron on board INS Darshak. He was selected for the Qualified Flying Instructor's course in January, 1977. On completion of the course, he was posted to 561 Indian Naval Air Squadron as a Staff Qualified Flying Instructor and then as Senior Pilot.

His performance both as Instructor and as Senior Pilot was exemplary. He single handedly carried out the advance Helicopter Conversion of four pilots of the 11 Helicopter Conversion Course and basic conversion of six pilots of the 14 Helicopter Conversion Course. This was done at a time when no other Qualified Flying Instructor was available to the Squadron and when all Alouette helicopters had remained grounded for a considerable length of time. His contribution towards the training of helicopter pilots has been commendable. As Senior Pilot, he has flown 512 hours on helicopters, most of which was on instructional flying.

He has also undertaken life saving missions from Indian as well as foreign ships on the high seas during the monsoons and in inclement weather. On 12th July, 1976, he rescued

one ailing crew member from the Greek Merchant Vessel *Libra* off Bombay. On 26th July, 1976, he rescued a heart patient from the Panamanian Super Tanker, *Texaco Mara Caibo* 30 miles off Bombay. On 27th July, 1979, he rescued an unconscious patient from Merchant Ship *Lanister*, a British Tanker, off Cochin.

Lieutenant Commander Romesh Singh Kanwar has thus displayed high flying skill, exemplary leadership and exceptional devotion to duty.

Lieutenant Commander SURINDER KUMAR CHANDNA (01060 H) INDIAN NAVY.

Lieutenant Commander Surinder Kumar Chandna joined the Navy as an Aviation Cadet and was commissioned in December, 1969. To date, he has flown more than 2100 hours, out of which 1500 are on Alouette MK III and Match Role Helicopters. During the periods from May, 1972 to May, 1974, from July, 1976 to July, 1978 and from August, 1978 to March, 1980 he has logged 403.20, 430.05 and 616.55 hours respectively. In December, 1975, he was selected to undergo the Flying Instructor's Course. On its completion, he was posted to the Helicopter Training School where he capably undertook the helicopter conversion of undertrainee pilots.

Prior to his undergoing the Flying Instructor's Course, Lieutenant Commander Chandna had commendably served as Flight Commander on *INS Nilgiri* and on *INS Himgiri*. In April, 1972, he rescued an officer, who had ejected from a fighter aircraft at Sea off Goa. On 14th January, 1980, he was ordered to evacuate a serious heart patient from the merchant ship "*Kedar Nath*". He promptly got airborne, located the merchant ship and, maintaining his composure during the considerable delay that occurred on board the ship, he was finally able to get the patient winched up on board the helicopter at about 1835 hours in failing light.

Lieutenant Commander Surinder Kumar Chandna thus displayed professional skill, determination and devotion to duty of a high order.

Lieutenant ATUL VISHWANATH VAIDYA (01462) Y INDIAN NAVY.

On 1st July, 1980, Lieutenant Atul Vishwanath Vaidya, a qualified Alouette pilot, received, during his off duty hours a search and rescue call for a drowning fisherman off the Bogmolo Coast. Within minutes of the call, he rushed to the Squadron Headquarters, prepared the aircraft for the mission and flew to the indicated location. The weather, with very low clouds and gusty winds, was making flying operation extremely hazardous. Hovering the helicopter over the survivor required great precision, particularly because of the high sea waves. Notwithstanding the odds, he maintained his presence of mind and rescued the fisherman with the help of his crewmen.

Lieutenant Atul Vishwanath Vaidya thus displayed professional skill and devotion to duty of a high order.

Leading Seaman PURAN CHAND (084369Z) INDIAN NAVY.

On 8th/9th March, 1980, *INS Nistar* was deployed for the recovery of a vital item of naval hardware which had sunk at sea at a depth of 50 metres. The sea conditions were unfavourable and diving is not normally undertaken under such hazardous conditions.

Leading Seaman Puran Chand was selected as the first diver for salvaging the object. He dragged, under water, the heavy recovery-gear over a distance of more than 18 metres to the vicinity of the object against a strong under-water current. By continuously working for more than 45 minutes under-water in the prevailing adverse conditions, he set a fine example and inspired the remaining divers who participated in the eventual successful recovery of the object.

In this action, Leading Seaman Puran Chand displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

NARENDRA NATH ROY, Engine Mechanic First Class (057098-W) INDIAN NAVY.

On 8th/9th March, 1980 *INS Nistar* was required to recover a vital item of naval hardware which had sunk at Sea at a depth of 50 metres. During the recovery operations, conducted under hazardous diving conditions, four deep-sea divers made unsuccessful attempts to secure the recovery-gear to the object. When chances for recovery of the item seemed remote as diving conditions had further deteriorated, Engine Mechanic Narendra Nath Roy volunteered to undertake the seemingly impossible task.

Subsequently, through his determined and sustained efforts, he succeeded in securing the recovery-gear to the object and the same was pulled out intact.

In this action, Engine Mechanic Narendra Nath Roy displayed determination, professional skill and exceptional devotion to duty.

S. NILAKANTAN
Dy. Secy. to the President

MINISTRY OF PLANNING (DEPARTMENT OF STATISTICS)

New Delhi-1, the 16th January 1982

No. A-46011/10/81-Estt.II.—The last date for submission of the report by the Working Group on Savings set up *vide* this Department Notification No. A-46011/10/81-Estt.II. dated the 4th May, 1981 and extended *vide* Notification of even no. dated 9th November, 1981 upto 5th January, 1982, is further extended upto 28th February, 1982.

V. D. AHUJA, Under Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE (DEPTT. OF AGRI. & COOPERATION)

New Delhi, the 24th February 1982

RESOLUTION

No. 43-28/74-LDT.—The Government of India have decided to nominate the following additional non-officials as members of the Central Poultry Development Advisory Council, as reconstituted *vide* this Ministry's Resolution of even number dated the 20th May, 1981.

1. Shri V. Sambasiva Rao,
Convener,
All India Small Poultry Farmers Association,
Shivnagar,
Warangal-506002—(Andhra Pradesh)
2. Shri K. Bhasker Rao,
President,
A. P. Poultry Farmers Welfare Association,
1-1-169/A, Charminar Cross Roads,
Hyderabad-500020.
3. Shri Joga Venkataramana Yadav,
House No. 18-1-111,
Near Police Station,
Pithapuram-533450,
East Godavari District,
Andhra Pradesh.
4. Shri Babu Singh,
President,
All India Poultry Farmers Association,
Harindra Farms, P.O. Dera, Mehrauli Block,
New Delhi.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments, Administration of Union Territories and the Departments of the Ministries of the Government of India.

2. Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

P. S. KOHLI, Addl. Secy.